पहले शौचालय फिर शादी

शौचालय नहीं होने से ससुराल से वापस लौट जाने वाली नवविवाहिताओं की संख्या धीरे–धीरे बढ़ती जा रही है। कई युवतियां इस वजह से शादी से इनकार कर दे रही हैं कि उनके होने वाले ससुराल में शौचालय नहीं है। लेकिन इससे हटकर एक नई कहानी के सूत्रधार बने हैं मध्यप्रदेश के हरदा जिले के बिच्छापुर गांव के राजेश राठौर। श्री राठौर ने तय कर लिया था कि जब तक घर में शौचालय नहीं बन जाएगा, तब तक वे शादी नहीं करेंगे। इस बीच उनका रिश्ता बैतूल जिले के एक परिवार में तय हो गया, पर उन्होंने कह दिया कि रिश्ता भले ही तय हो गया, पर शादी वे शौचालय बनाने के बाद ही करेंगे। आखिरकार जब शौचालय बना, तब उन्होंने सुश्री सीमा राठौर से शादी की।

श्री राठौर ने बिच्छापुर पंचायत में स्वच्छता दूत के रूप में भी काम किया। उनकी इस प्रतिवद्धता को देखते हुए ही पंचायत ने उन्हें स्वच्छता दूत बनाया। उन्होंने न केवल पहले अपने घर का शौचालय बनाया बल्कि स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों के साथ मिलकर गांव को खुले में शौच से मुक्त कराने में सफलता हासिल की। उनकी इस कामयाबी पर जिले के प्रभारी मंत्री ने सम्मानित भी किया। श्री राठौर बताते हैं, ''मेरे गांव में दो ऐसे क्षेत्र थे, जहां लोग खुले में शौच जाते थे। मेरे घर के लोग भी शौच के लिए बाहर ही जाते थे। मैंने जब खुले में शौच जाने से होने वाले खतरे के बारे में सुना, तब निश्चय कर लिया कि मेरा पहला काम घर में शौचालय बनाना होगा। शौच के कारण होने वाली गंदगी के कारण बीमारियों की संभावना एवं घर की महिलाओं की इज्जत के लिए शौचालय बहुत ही जरूरी है। इसी कारण मैंने तय किया कि पहले शौचालय बनवाऊंगा और उसके बाद शादी करूंगा।'' श्री राठौर को पंचायत से शौचालय बनाने के लिए पैसे मिलने में देरी हो रही थी, तो उन्होंने अनाज बेचकर पैसा जुटाया और उसके तुरंत बाद ही शौचालय का निर्माण करवाया। उन्हें शासन से राशि तो मिली, पर उन्होंने बेहतर शौचालय बनाने के लिए ज्यादा पैसा लगाया। श्री राठौर की पत्नी सुश्री सीमा कहती हैं, ''मेरे मायके में पहले से शौचालय था। मुझे चिंता थी कि ससुराल में शौचालय नहीं होगा, तो मैं क्या करूंगी। पर शादी से पहले शौचालय निर्माण हो जाने से मुझे बहुत ही खुशी हुई थी।''

यूनिसेफ, मध्यप्रदेश के प्रमुख श्री ट्रेवर डी. क्लार्क कहते हैं, ''खुले में शौच बच्चों एवं महिलाओं के विकास में बड़ी बाधा है। महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा एवं बच्चों की सेहत की सुरक्षा के लिए जरूरी है कि खुले में शौच से मुक्ति पाई जाए। गांवों में युवा

समुदाय इस बात के लिए आगे आ रहा है और वे अपने घरों में शौचालय बनाने के साथ–साथ गांव को भी खुले में शौच से मुक्त बनाने में योगदान दे रहे हैं। समुदाय आधारित समग्र स्वच्छता के माध्यम से युवाओं के आगे आने से स्वच्छता अभियान को तेज गति देने में सहायता मिली है।''

बिच्छापुर के पंचायत सचिव कहते हैं, ''गांव को खुले में शौच से मुक्त कराने में स्वच्छता दूत के विचार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गांव में पानी की कोई समस्या नहीं है। यहां कुल 22 हैंडपंप है, जिसमें भरपूर पानी आता है। इसलिए लोगों के सोच बदलते ही महज दो महीने में 146 घरों में शौचालय बन गए। इस तरह से सभी 477 परिवारों में शौचालय बनने के साथ ही गांव खुले में शौच से मुक्त हो गया।''

गांव के सरकारी स्कूल हो या आंगनवाड़ी या फिर पंचायत, सभी जगहों पर शौचालय एवं पानी की बेहतर व्यवस्था है। अभी हाल ही में बनी नई आंगनवाड़ी में शौचालय के साथ–साथ बाथरूम भी बनाया गया है। पानी लिए बोरिंग की गई, छत पर पानी की टंकी को रखा गया और शौचालय एवं बाथरूम में नल से पानी की व्यवस्था की गई। आंगनवाड़ी क्रमांक 2 की कार्यकर्ता सुश्री स्वाति तोमर कहती हैं, ''गांव में छोटे बच्चों को भी अब शौचालय में जाने की आदत पड़ गई है। आंगनवाड़ी में भी स्वच्छता संबंधी आदतों पर ध्यान दिया जाता है, जिससे बच्चों के व्यवहार में अंतर आया है।''

प्राथमिक शाला की 5वीं की छात्राएं रानी एवं आसना बताती हैं कि उनके घरों में उनके जन्म से पहले ही शौचालय बन गए थे, पर कई सहेलियों के घरों में शौचालय नहीं होने से उन्हें बाहर जाना पड़ता था। जो शौच के लिए बाहर जाती थी, उन्हें स्कूल में शरम आती थी, पर अब उन्हें भी अच्छा लगता है। हमारे स्कूल के सभी बच्चे शौचालय में ही शौच के लिए जाते हैं। 5वीं की छात्रा राधिका एवं फिजा बताती हैं कि उनके घर में शौचालय बन जाने से उन्हें अच्छा लगता है।

पूर्व सरपंच बलराम डुडी कहते हैं, ''बच्चों की मांग, स्वच्छता दूत के विचार और उसकी सक्रियता, ग्रामीण की जागरूकता और हम सब की पहल ने बिच्छापुर को खुले में शौच से मुक्त बना दिया है। सबसे बड़ी बात यह है कि आज सभी ग्रामीणों एवं बच्चों में स्वच्छता संबंधी आदतों में कोई कमी नहीं दिख रही है।''

****

स्त्रोत : यूनीसेफ, भोपाल